ओम् शांति। बच्चों ने माताओं की महिमा सुनी। अब माता को भगवान नहीं कहा जा सकता; क्योंकि भगवान को तो पिता कहा जाता है। प०पि० अब पिता है तो माता भी ज़रूर है। हर एक मनुष्य अपन को भगवान इस (कारण) कह भी न सकते। माता को भी बहुत मानने वाले हैं। माता है तो पिता भी है। माता अपन को भगवान कह न सके; क्योंकि भगवान को पिता कहते हैं। यह प्वाइंट धारण करने की है। जगदम्बा की कितनी महिमा है। ऐसे नहीं कहेंगे कि भगवान व बाप सर्वव्यापी है। नहीं, जब माता–पिता कहा जाता तो बच्चे भी कह सकते। अगर सर्वव्यापी है, सब भगवान हैं तो भगवती हो न सकती। सर्वव्यापी के ज्ञान में भगवती हो न सके। सबमें भगवान है तो आत्मा पिता बन जाती, फिर माता नहीं कह सके। यह बड़ी अच्छी समझ(ाने) की बात है। सर्वव्यापी के ज्ञान ने ही भारत को सतोप्रधान से तमोप्रधान बनाया है। है तो ड्रामा अनुसार। मनुष्य मात्र को सतोप्रधान से तमोप्रधान बनना ही है। तो भी आत्मा अपन को भगवान नहीं कह सकते। भक्त कहते हम भगवान हैं तो फिर माता सिद्ध न होती और फिर भक्त तो पुनर्जन्म लेते आते हैं। ऐसे तो नहीं, भगवान को अपना शरीर है, उनको भी पुनर्जन्म लेना पड़ता है। नहीं। इस सर्वव्यापी की बात पर अच्छी रीति समझाना है। भक्तों के लिए भगवान चाहिए ना। भक्त अनेक हैं। भाई–बहन सब भगत हैं। आत्मा भगत बन गई है। आत्मा कहती है इस समय मैं भक्तिमार्ग में हूँ, फिर आत्मा कहेगी, अभी मुझे बाप मिला है तो मैं ज्ञान में हूँ। आत्मा ही ज्ञान सुनती है। भगत, भगवान से फल माँगते हैं, कुछ न कुछ माँगते हैं। सबको भगवान कोई भी हालत में कह न सकते। भगत तो पुनर्जन्म लेते हैं, भगवान तो पुनर्जन्म नहीं लेते। उनका शरीर है नहीं। यह शरीर किसका बना हुआ है? पाँच तत्व का। यह तो सब जानते हैं पाँच तत्व के शरीर में भगवान को जन्म नहीं लेना है। मनुष्य को पुनर्जन्म ज़रूर लेना है। ऐसे कभी नहीं सुनेंगे, ब्र०वि०शं० चौरासी जन्म लेते हैं। यह मनुष्य के लिए हैं 84 जन्म। सतयुग में भी मनुष्य हैं। ब्र०वि०शं० देवताएँ हैं सूक्ष्मवतनवासी। उनके लिए 84 जन्म नहीं कहेंगे। हर एक बात अच्छी रीति बुद्धि में बिठानी है। आत्मा कहती है मैं पुराने शरीर छोड़ दूसरे में प्रवेश करता हूँ। पुराना शरीर छोटा है वा बड़ा है, एक छोड़ दूसरा लेता हूँ। वहाँ तो समझते हैं अभी पुराना शरीर छोड़ नया लेना है। यहाँ तो अचानक छोटे वा बड़े का शरीर छूट जाता है। तो आत्मा कहती, मैं एक शरीर छोड़ दूसरे में बैठता हूँ। आत्मा पुनर्जन्म लेती है। परमात्मा के लिए नहीं कहेंगे। ब्र०वि०शं० को परमात्मा नहीं कहेंगे। यह तुम्हारी बुद्धि में है– ब्र०वि०शं० सूक्ष्मवतनवासी हैं, बाबा मूलवतन निवासी है। और कोई समझते कि हम मूलवतन वा निर्वाणधाम, वानप्रस्थ, वाणी से परे स्थान में रहने वाले हैं। वानप्रस्थ नाम इसलिए रखा है; क्योंकि वाणी से परे अवस्था में जाने लिए गुरू करते हैं। यह 60 वर्ष बाद जब बूढ़े होते हैं तब वानप्रस्थ लेते हैं। (य)हाँ तो छोटे–बड़े सब समझते हैं हम वानप्रस्थी हैं। आत्मा कहती है, मुझे वाणी से परे स्थान में जाना है। आत्मा कहती है मैं अब वानप्रस्थ में जाने लिए गुरु करता हूँ। आत्मा को हमेशा मेल कहा जाता है वास्तव में; परन्तु शरीर है तो आत्मा कहती है, इस समय मुझे फीमेल का तन मिला हुआ है, इस समय मुझे मेल का तन मिला हुआ है। आत्मा को तो वानप्रस्थ में जाने लिए पुरुषार्थ करना है। माताएँ कभी वानप्रस्थी नहीं बनती हैं; परन्तु यहाँ बाप समझाते हैं, आत्मा तो मेल है। (तो) तुमको भी यह रहता है, हमको परमात्मा पास जाना है। बाप कहते हैं, तुम सबकी आत्माएँ अब वानप्रस्थ में है, अब जाना है। मैं सभी आत्माओं को ले जाने आया हूँ; इसलिए अब मुझे याद करो तो मेरे धाम आ जावेंगे। यह कोई मनुष्य कह न सके। सुप्रीम रूह बाप ही कहते हैं। सन्यासी–उदासी आदि ऐसे बच्चे–2 कह बात नहीं करेंगे। अभी तो सबकी जड़जड़ीभूत अवस्था है। बाप का ज्ञान किसमें है नहीं।

पूछो, भगवान कहाँ है? तो कहते, सर्वव्यापी है। गोया भगवान का ज्ञान कोई में है नहीं। इसलिए भक्ति करते हैं भगवान से मिलने; परन्तु कैसे और कब मिलेंगे– यह किसको पता नहीं। बाप कहते हैं, कोटों में कोऊ, मेरे द्वारा मुझे जानते हैं। मनुष्य तो सर(सों) मिसल अथाह हैं, उसमें कोटों में कोई जो सिकीलधे हैं वही आकर मुझे पहचानेंगे और बाप से अपना वर्सा लेंगे। तुम समझाय सकते हो कि हम तो हैं भगत। वास्तव में सभी भगत हैं, चाहते हैं कि भगवान से हम भक्ति का फल लेवे। अगर तुम सबको भगवान कहते हो तो क्या सभी फल देंगे? हम तो भगत हैं, तुम अपन को भगवान कहते हो, क्या हम भक्तों को तुम फल देंगे? भगवान तो सभी का एक होगा ना। सभी भगवान हों तो फिर भगत कोई हो न सके। अगर तुम भगवान हो तो बाकी तुमको क्या चाहिए! भक्तों को फल मिलता है भगवान से। अपन (को) भगवान कहना, यह तो एक इनसल्ट है। मुसलमान के सामने कोई कहे– हम अल्लाह हैं, तो झट घूसा मार दे। अरे, तुम तो अल्लाह के बंदे हो। बंदे गंदे हो, तुम कैसे अल्लाह कहते हो? हम नहीं मानते। अपन को भगवान वा अल्लाह कहना इनसल्ट है। अगर किसको अक्ल हो तो झट उनको चमाट मार दे– नालायक! हम अल्ला बाप को मानते, तुम फिर कहते हो– हम अल्लाह हैं। क्या सभी अल्लाह हैं? चालाक हो तो झट थप्पड़ मार डाले, फिर भल पुलिस पकड़े। कोर्ट में भी कह सकते हैं– यह हमको कहने लगा, हम अल्ला हैं। अब मनुष्य बंदा गंदा कहे– हम अल्लाह, तुमको हमने रचा है, तो ज़रूर मुझे गुस्सा नहीं लगेगा! इससे बड़ी कोई इनसल्ट होती नहीं। अल्लाह से हम बहिष्त का वर्सा लेने (चा)हते, यह फिर कहता– हम अल्लाह हैं। अब तुम ही जज करो। तुम जज हो, तुमको कोई कहे– हम अल्ला है, यह कैसे हो सकता! अल्ला तो सबसे बड़ा है। यह बहुत समझने की बातें हैं। कब भी कोई अपन को अल्ला वा भगवान कह न सके। बाप सभी का एक होगा। ऐसे बहुत कहते हैं, परमात्मा सर्वव्यापी है। अरे, तुम भगवान हो, हम तो नहीं मानते। हम तो भगत हैं, आशिक हैं उस माशूक के। तुम तो यह बड़ी इनसल्ट करते हो। इस समय सब मनुष्य बन्दे गंदे हैं, विषय सागर में गोता खाते हैं। एक परमात्मा को ही पतित–पावन कहा जाता, तुम फिर अपन को भगवान कहते हो! तो क्या तुम पतित–पावन हो? निकलो यहाँ से बाहर। ऐसे (झू)ठी बातें यहाँ मत करो। फिर बाहर भल क्या भी कहें। उन्हों के गुरु तो बहुत होते हैं ना। अनेक प्रकार के गुरु लोग होते हैं। ऐसे अहंकारी बहुत आते हैं। बाप समझाते हैं, ड्रामा अनुसार सबको नास्तिक बनना ही है। फिर हम आए आस्तिक बनाते हैं। आस्तिक और नास्तिक– ये अक्षर सतयुग–त्रेता में काम नहीं आते। संगम पर ही आस्तिक–नास्तिक का राज़ समझाया है। आगे तो कहते थे– हम रचता और रचना के आदि–मध्य–अंत को नहीं जानते, अभी फिर कहते, हम भगवान हैं। तो तुम समझा सकते हो, तुम्हारे बड़े तो कहते रहे– रचता और रचना बेअंत हैं, तुम फिर अपन को रचता कहते हो। बीज बेअंत हो सकता, झाड़ बेअंत कहते हैं, इतने पत्ते आदि गिन न सकते। एक बीज से कितने टार–टारियाँ, पत्ते आदि होते हैं। तुम तो चेतन, बोलते–चालते हो। सबसे बड़ी महिमा मनुष्य की ही होती है। भल कई जनावर भी बहुत अक्लमंद होते हैं। मनुष्य जनावर से अक्ल लेते हैं। समुद्र में खेखरा(केकड़ा) होता है, ऐसे वण्डरफुल डिजाइन बनाते हैं। कपड़े बनाने वाले इनसे सीखते हैं। साइंस घमंडियों ने यह एरोप्लैन आदि का अक्ल कहाँ से लिया? ..... से। यह सब ड्रामा में नूँध है, कोई नई बात नहीं। जिस चीज़ का जब समय होता है तब उस चीज़ से अक्ल लिया जाता है। बाप कहते हैं, मैं आकर बच्चों को सारे ड्रामा का राज़ समझाता हूँ। यह बना–बनाया ड्रामा है ना। ड्रामा के ऊपर चल(ते) रहना है। तुम बाप के बच्चे स्वदर्शनचक्रधारी ब(न) जाते हो। आत्मा स्वदर्शनचक्रधारी बनती है प०पि०प० द्वारा; क्योंकि वह भी स्वदर्शनचक्रधारी है। तुम आत्माओं को बैठ आप समान बनाते हैं। तुम सृष्टि के आदि–मध्य–अंत को जानते हो। साधु–संत आदि क्या जानें! तुम नई दुनिया के लिए, नए धर्म स्थापना लिए नई बातें सुनती हो प०पि०प० से, जो

सृष्टि को भी नया बनाते हैं, तुमको भी नया बनाते हैं। नई सृष्टि में फिर नया ज़माना स्वर्ग का। अभी तो नर्क का ज़माना है। तुम नर्क के ज़माने में हो। अभी प०पि०प०, जो स्वदर्शनचक्रधारी हैं, त्रिकालदर्शी हैं, उन द्वारा तुमको नॉलेज मिली है। प०पि०प० ही आए कर स्वदर्शनचक्रधारी बनाते हैं। यह हर एक बात नई है, धारणा करने लायक है; परन्तु धारणा सभी को नहीं होती। धारणा रहने से खुशी का नशा रहता है। गृहस्थ व्यवहार में रहते इसी नशे में रहना है। स्त्री अथवा पुरुष हर एक को स्वदर्शनचक्रधारी यहाँ बनना है। बाकी भुजाएँ तो हर एक को दो–(2) होती हैं। मनुष्य जो 84 जन्म लेते हैं, उनको 4–8 भुजाएँ हो नहीं सकतीं। तुम ऐसे कब नहीं सुनेंगे। शंकर को 100 अथवा 1000 भुजाएँ नहीं दिखाते। ब्रह्मा को भुजाएँ दिखाते हैं। 4 भुजाएँ वाले ब्रह्मा पास गया, 1000 भुजाएँ वाले पास गया। ब्रह्मा की सन्तान वृद्धि को पाती जाती है तो कितनी बाँहें हो जावेंगी! 500 करोड़ मनुष्य हैं तो उन्हों की 1000 करोड़ बाँहें हो जाएँ। प्रजापिता है ना। सृष्टि रची है तो बरोबर बाँ(हें) हैं। बाकी मनुष्य कोई 4/6 भुजाएँ वाले होते नहीं हैं। सूक्ष्मवतन में तो कुछ है नहीं। ये सब बाप बैठ समझाते हैं। कहते हैं, इस (दादा) ने भी बहुत शास्त्र पढ़े, गुरु किए हैं। अब इन सबको छोड़ो। यह है भक्तिमार्ग। तुम्हारा भक्ति का पार्ट पूरा हुआ। तुम ऑलराण्डर हो। शुरू से लेकर तुमने सबसे जास्ती भक्ति की है। भक्त तो इस समय बहुत हैं। तुम तो थोड़े भक्त हो। बाबा कहते हैं, तुमको साक्षात्कार में दिखाता भी हूँ, कैसे भक्त याद करते हैं। उनको साक्षात्कार कराता हूँ। तुमने ही सतोप्रधान भक्ति की है तो ज़रूर तुमने जास्ती जन्म लिए हैं। 63 जन्म तुमने भक्ति में काटे हैं, इसके एवज 21 जन्म तुमको सुख मिलता है। कितनी समझने की बातें हैं। इसलिए नए से पहले तो फार्म भराया जाता है। फार्म बड़ा अच्छा है– तुम्हारा गुरु कौन है? गुरु ब(ताया) तो ज़रूर भक्त ठहरा ना। तुम ही भगवान हो फिर गुरु क्यों किया है? भगवान, भगवान को कैसे गुरु बनावेगा! भक्त भगवान से मिलने लिए गुरु करेंगे, तुम भगवान खुद हो ही, बाकी गुरु से क्या बनेंगे! बड़ा युक्ति से पकड़ना है। रोज़ नई–2 बातें समझाते हैं। बड़ी रमजबाज़ी से पकड़ना है। भल युद्ध में बड़ा युक्ति से चलते हैं– कहाँ से फलाने को अंगुली लगाओ, तीर मारूँ। यह तो एक जैसे टेव पड़ गई। झट कह देते, ईश्वर अथवा खुदा सर्वव्यापी है। जिसने जो कहा वो चल पड़ा। आदिदेव ब्रह्मा को महावीर कह मुँझाय दिया है। कोई महावीर को हनुमान कह देते; क्योंकि हनुमान ने महावीरता दिखाई है। कितनी (दंत) कथाएँ हैं! कहाँ वह महावीर, फिर उनका नाम भूँझूत रखा है। आदिदेव तो ब्रह्मा है और मनुष्य है। जगदम्बा भी मनुष्य है। इतनी भुजाएँ आदि कहाँ हैं! माता को इतनी भुजाएँ हो तो हमको भी होनी चाहिए। वंडरफुल बातें हैं! ऐसे नहीं, सभी धारणा कर ज्ञान के उसी नशे में रहते हैं। नम्बरवार हैं। सतसंगों में कोई स्टडी की बात नहीं रहती, न नम्बरवन का ध्यान रहता है। ये तो स्कूल है। नम्बरवार बच्चे हैं। कोई को माया का लोड़ा आया और ये गिरा; इसलिए ब्राह्मणों की माला नहीं बन सकती। फाइनल जब बनेगी तो इसको रुद्रमाला कहेंगे। तुम रुद्र शिवबाबा की संतान हो। रुद्र यज्ञ रचते हैं तो रुद्र ....बड़ा बनाते हैं, बाकी छोटे–2 सालिग्राम बनाए पूजा करते हैं। बाप बैठ गुह्य–2 बातें सुनाते हैं। जो सर्विसएबुल बच्चे हैं उनको अच्छी रीत धारणा होगी और समझाए सकेंगे। ये तो बड़ा सहज है, हम आत्मा है। कहते हैं ब्रदरहुड है, आत्माएँ सब भाई–2 हैं। कब (क)हते, चीनी–हिन्दी भाई–2, कब कहेंगे– हिन्दू–मुसलमान भाई–2; परन्तु वो तो नाम–रूप में जाते हैं ना। भाई–2 कह फिर आपस में लड़ मरते हैं। जब कहते हो ब्रदरहुड तो फिर फादरहुड कैसे कहते हो? सब ईश्वर कैसे कहते हो? सब भगवान भाई–2 कैसे हो सकते हैं? वो तो सब आत्माओं का बेहद का (बाप) है। कितनी सहज बात है; परन्तु पत्थरबुद्धि होने कारण विद्वान–पंडित आदि कोई भी समझ नहीं सकते। मनुष्यों को भी समझ न होने कारण सब बात में हाँ–2 करते रहते। लव–कुश (डब) से निकले। ....अब ये कैसे होगा? इसको कहा जाता है दंत कथाएँ। भक्तिमार्ग में बुद्धि दुर्गति को पाती है; इसलिए पत्थरबुद्धि कहा जाता है। बाप आकर फिर पारसनाथ बनाते हैं। इनको वैकुण्ठ, पारसपुरी कहा जाता है। पत्थर बुद्धि, पारस बुद्धि मनुष्य ही बनते हैं।

सूक्ष्मवतन में तो हैं ही देवताएँ। ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना होती है, फिर आहिस्ता–2 बढ़ती है। एक से दो, दो से (चार) होते वृद्धि को पाते रहते हैं। बरोबर प्रजापिता ब्रह्मा है, ज़रूर नई सृष्टि रचता होगा (ना)। जगत पिता वह है रचने वाला। तुमको रचा है प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा। शिवबाबा ने रचा है। ब्रह्मा द्वारा नई (प्रजा) की रचना रचते हैं अर्थात् पुरानी को नई बनाते हैं। मनुष्य फिर समझते हैं, सागर में पीपल के पत्ते पर आया। अच्छा, फिर उसको किसने रचा? यह बाप बैठ समझाते हैं– नई प्रजा कैसे रचते हैं। वहाँ गर्भ में भी जैसे कि खीर सागर में बड़े आराम से बैठे हैं। उस समय कोई ज्ञान में नहीं रहता। शास्त्रों में कितनी बातें वाह्यात लिख दी हैं। प्रलय भी छोटी–बड़ी दिखाते हैं। वह कहते हैं, प्रलय होती है, कब कहते हैं– प्रलय कब होती ही नहीं। मैं आता हूँ ब्रह्मा द्वारा पतित को पावन बनाने। पतित दुनिया में मुझे आना पड़ता है। तुम जानते हो, कल्प–2 हम बच्चे बाप द्वारा भारत को पतित से पावन बनाते हैं, एक–2 को भूँ–2 करते हैं। कीड़े.... की कोई जात नहीं है। विष्टा के कीड़े विकारी पतित हैं। बाप है पतित–पावन। उन द्वारा हम भी बाबा के मददगार, खुदाई खिदमतगार बनते हैं। हम भी पावन बनते और बनाते हैं। सन्यासी तो घर–बार छोड़ कर कहेंगे, हम तो पावन हैं ही, हमको कोई पतित आत्मा नहीं कहेंगे। हाँ, महान आत्मा कहेंगे; परन्तु ऐसे नहीं वह पावन हो गए। घड़ी–2 पाप (धो)ने, स्नान करने जाते हैं तो पावन कैसे ठहरे! यह तुम कह सकते हो। मनुष्य तो डरते हैं, कहाँ बद्दुआ वा श्राप न दे देवे। तुम तो शक्तियाँ हो, कह सकते हो– तुम महान आत्मा कैसे कहते हो, तुम्हारा शरीर तो विख से पैदा होता है? भल अभी पवित्र बने हो, फिर भी विष्टा से पुनर्जन्म लेंगे। तुम कहते हो, यह शरीर पतित बन(ता) है, आत्मा निर्लेप है, ऐसे तो है नहीं। निर्लेप तो सिर्फ प०पि०प० की आत्मा को कहेंगे; क्योंकि वह पुनर्जन्म में नहीं आते हैं, सिर्फ (लोन) लेते हैं। उनपर कोई लेप–छेप नहीं (लगता) है; परन्तु मनुष्य इन (बातों) को समझते बड़ा मुश्किल हैं। सन्यासी पवित्र हैं, इसलिए उन्हों का मान है। अभी तुम शक्तियाँ आप खड़ी हुई हो। उनमें कोई गृहस्थी सन्यासी बनते हैं, कोई कुमार सन्यासी बनते हैं। तुम्हारे में भी कोई बाल ब्रह्मचारी हैं, कोई अधर हैं। तुम कहोगे– हम राजयोगी सन्यासी हैं, सन्यास किया है विकारों का। गृहस्थ में रहते विकारों का सन्यास करना कोई की ताकत नहीं। बाप कहते हैं, गृहस्थ व्यवहार में रहते सिर्फ मुझे याद करो। बाप का बनेंगे तो मदद ज़रूर मिलेगी। बाप सौतेले बच्चों को इतनी मदद नहीं करेंगे जितनी मातेले को। तो बाप के बच्चे बनते हैं, वही वर्सा ले सकते हैं। बाबा बस, हम आपके हैं, यह सब कुछ आपका है। बाप फिर कहते हैं, तुमको अपने बच्चों को सम्भालना है, इन्श्योर करना है, पुरानी दुनिया से चलना है नई दुनिया में। हम तुमको सब कुछ वहाँ देंगे, यहाँ कम्पलीट बैगर बनो। देह सहित देह के सभी संबंध भूल अपन को अशरीरी समझ मुझे याद करो तो तुम मेरे साथ चलेंगे। मैं तुम्हारा पण्डा हूँ। तुमको भी फिर पण्डा करना है। (इस) अंतिम जन्म लिए सबको कहा है– आत्माओं अब वापस चलना है। पार्ट पूरा हुआ वाया शांतिधाम होकर फिर सुखधाम में आकर सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राजा–रानी बनेंगे। यह शरीर छोड़ घर जाना है, फिर पुनर्जन्म स्वर्ग में लेना है। वहाँ हेल्थ–वेल्थ–हैपीनेस रहती है। हम विश्व के मालिक बन रहे हैं। पहले–2 तो एक बात पर पकड़ना है– तुमने कहा, ईश्वर सर्वव्यापी है, फिर गुरु क्यों किया है? भगवान तो सब भक्तों का एक गुरु है, तुमने गुरु क्यों किया है? युक्ति से पकड़ना चाहिए। बच्चे कहते हैं, हमारा मोस्ट बिलवेड बाप है। बाप ऐसे नहीं कहेंगे कि सब बच्चे मोस्ट बिलवेड है। नहीं, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ज़रूर कहना पड़े। शिवबाबा तो एक ही है न! तुम हो गुप्त सेना। वन्दे मातरम् गाई हुई है। बच्चे को अहंकार नहीं आना चाहिए। माताओं को आगे रखना है। शिकार लाकर सामने देना है कि इनको बाण मा(रो)। अच्छा, बापदादा, मात–पिता का सिकीलधे बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ